कर्मकाण्डसंस्कारविज्ञानम्

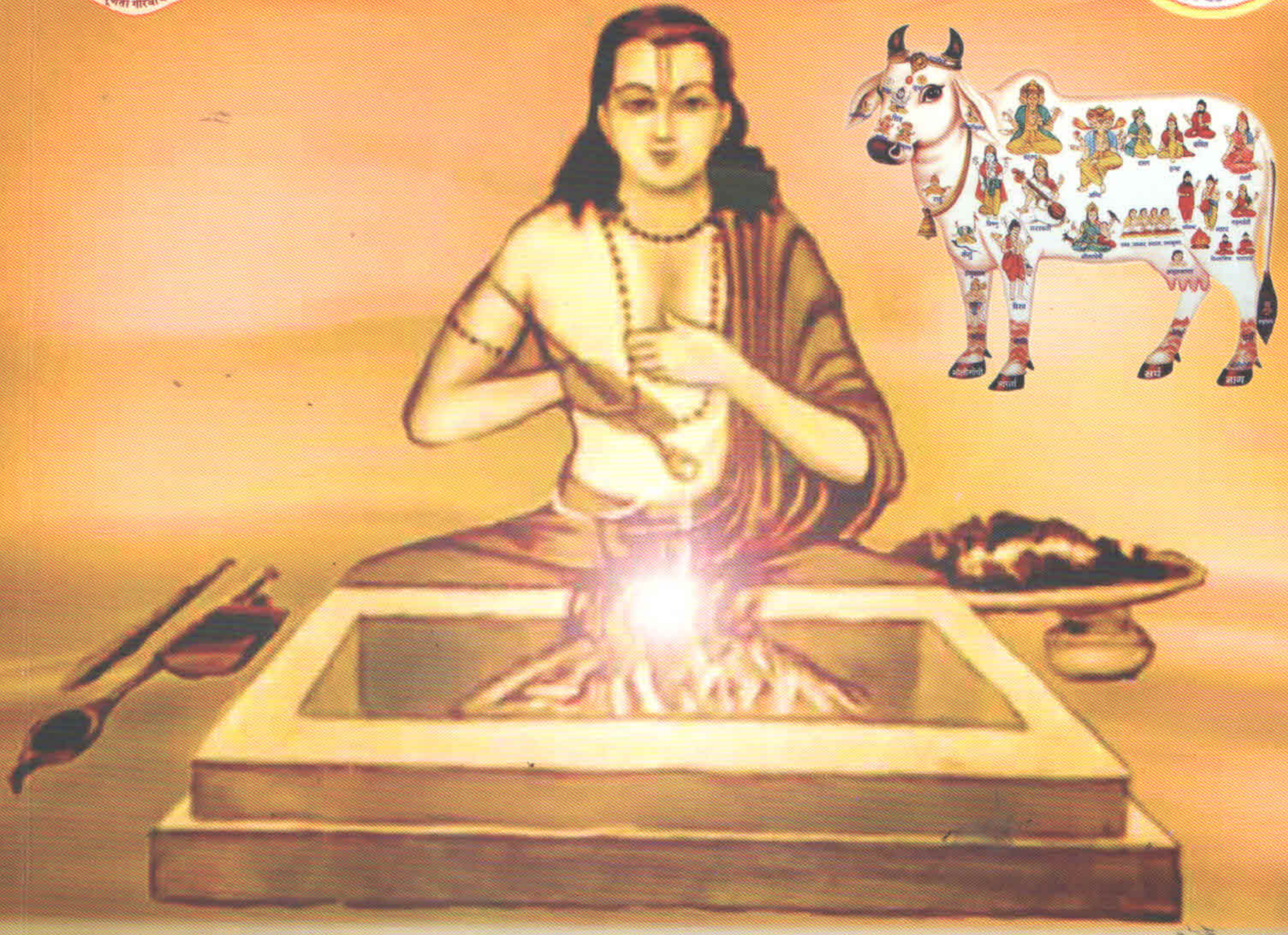

प्रधानसम्पादकः
प्रो. अर्कनाथचौधरी

सम्पादकः
डॉ. शत्रुघ्नपाणिग्राही

सहसम्पादकः
डॉ. अश्विन का. राजगोरः

कर्मकाण्डसंस्कारविज्ञानम्

(महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम्, श्रीसोमनाथसंस्कृतियुनिवर्सिटी, तथा सन्तश्रीसन्ध्यागिरिबापुसंस्कृतवेदविद्यालयः, इत्येषां संयुक्ततत्त्वावधाने समायोजिता त्रिदिवसीया अखिलभारतीयवेदसङ्गोष्ठ्यां प्रस्तुतशोधपत्राणां संग्रहः)

प्रधानसम्पादकः

प्रो. अर्कनाथचौधरी

सम्पादकः

डॉ. शत्रुघ्नपाणिग्राही

सहसम्पादकः

डॉ. अश्विन का. राजगोरः

प्रकाशकः

डॉ. महेन्द्रकुमार अं. दवे
कुलसचिवः
श्रीसोमनाथसंस्कृतयुनिवर्सिटी
राजेन्द्रभुवनरोड, वेरावलम्–३६२ २६६.
गीर–सोमनाथजनपदम्, गुजरातम्
दूरभाषा : ०२८७६–२४४५३२
E-mail : sssu.veraval@gmail.com

कर्मकाण्डसंस्कारविज्ञानम्

(महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम्, श्रीसोमनाथसंस्कृतियुनिवर्सिटी, तथा सन्तश्री सन्ध्यागिरिबापुसंस्कृतवेदविद्यालयः, इत्येषां संयुक्ततत्त्वावधाने समायोजिता त्रिदिवसीया अखिलभारतीयवेदसङ्गोष्ठ्यां प्रस्तुतशोधपत्राणां संग्रहः)

आयोजकसंस्था:

महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम्,
श्रीसोमनाथसंस्कृतयुनिवर्सिटी, वेरावलम्
सन्तश्री सन्ध्यागिरिबापुसंस्कृतविद्यालयः

संरक्षकाः

पू. सन्तश्रीभगवद्गिरी बापु
प्रो. अर्कनाथचौधरी
प्रो. विरूपाक्षजडिपालः

प्रकाशकः

डॉ. महेन्द्रकुमार अं. दवे
कुलसचिवः
श्रीसोमनाथसंस्कृतयुनिवर्सिटी
राजेन्द्रभुवन रोड, वेरावलम्–३६२ २६६.

ISBN : 978-93-83097-23-4

प्रतिलिपयः – ५००
प्रकाशनवर्ष–२०१७
प्राप्तिस्थानम् – सन्तश्री सन्ध्यागिरिबापुसंस्कृतवेदविद्यालयः,
सामख्याली, कच्छ, गुजरातम् तथा
श्रीसोमनाथसंस्कृतयुनिवर्सिटी, राजेन्द्रभुवन रोड, वेरावलम्–३६२ २६६.

मुद्रणम्:

जलाराम ग्राफीक्स अेन्ड ओफसेट
परमहंस अेपार्टमेन्ट के पास, होटल कावेरी के पीछे,
अेस टी रोड, वेरावल - ३६२ २६६.
फोन : (०२८७६) २२१८६१

विजय रुपाणी

मुख्यमंत्री, गुजरात राज्य

Apro/kp/2017/08/21/my

दि. 21-08-2017

संदेश

गुरुजनों द्वारा अपने शिष्यों को आध्यात्मिक एवं जीवन मूल्यों का ज्ञान प्रदान करना भारतीय संस्कृति की परंपरा रही है। उन्होनें दी गई संस्कार रुपी विद्या को शिष्य जब अपने जीवन में ग्रहण करता है, तब वह अपने जीवनकाल के हर स्तर पर उन्नति प्राप्त करता है। खाद जिस प्रकार छोटे से पौंधे को बड़ा करने में महत्त्व रखता है ठीक उसी तरह पौधा स्वरुप शिष्य को खाद स्वरुप शिक्षक भी अपनी ज्ञान संपदा द्वारा निखारने का महत्त्व रखता है।

जानकर हर्ष हो रहा है कि **श्री सोमनाथ संस्कृत विश्व विद्यालय** तथा **सन्त श्री सन्ध्यागिरी बापु संस्कृत वेद विद्यालय** के तत्वावधान में **दि. 11 से 13 सितम्बर 2017** को **कर्मकाण्ड एवं संस्कारविज्ञान** पर अखिल भारतीय वेदसङ्गोष्ठी का आयोजन कच्छ में होने जा रहा है। इस अवसर पर भाग लेने वाले विद्वानों के शोधपत्रों का प्रकाशन भी किया जायेगा, जो प्रशंसनीय है। कार्यक्रम की सफलता के लिए मनोह्रदय से मेरी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

आपका,

(विजय रूपाणी)

To,
Dr. Satrughna Panigrahi, *Convenor,*
Shree Somnath Sanskrit University,
Rajendra Bhuvan Road,
Veraval, Dist. Gir Somnath – 362265.
e-mail: sssu.veraval@gmail.com

BHUPENDRASINH CHUDASAMA

सत्यमेव जयते

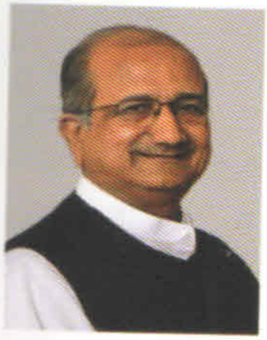

No. r.e. P.A /2017

Minister,
Revenue, Education(Primary, secondary and adult), Higher and Technical Education, Legislative & Parliamentary affairs.

Government of Gujarat,
Swarnim Sankul-1, 2nd Floor,
New Sachivalaya, Gandhinagar-382010

Date: 22/ 8 / 2017

शुभेच्छा संदेश

श्रीसोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान तथा सन्तश्री सन्ध्यागिरी बापु संस्कृत वेद विद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में सितम्बर दिनाङ्क ११-१३, २०१७ को कच्छ में "कर्मकाण्ड एवं संस्कार विज्ञान" पर "अखिल भारतीय वेदसङ्गोष्ठी" का आयोजन हो रहा है यह जानकर आनन्द हुआ ।

इस गोष्ठी में इस क्षेत्र के सभी विद्वान् और महानुभावों की प्रेरक उपस्थिति सभी के लिए लाभदायी होगी । वेदसङ्गोष्ठी में भाग लेने वाले विद्वानों के शोधपत्र भी प्रकाशित होगी, जो सभी के लिए उपयोगी होंगे । इस अखिल भारतीय वेदसङ्गोष्ठी की सफलता के लिए मैं हार्दिक शुभकामना देता हूँ ।

(भूपेन्द्रसिंह चुडासमा)

प्रति,
शत्रुघ्नपाणिग्राही
संयोजकश्री,
अखिल भारतीय वेदसङ्गोष्ठी,
श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय,
राजेन्द्रभुवन रोड, वेरावल, गीर-सोमनाथ

Ph (o) : 232250116 to 23250119, 23238076, 23243389 Fax: 23250120
Residence: Bungalow No. 10, Minister's Residence Sctor-20,
Ph (R) 079-23259600, 23259598, 23259603, 23222617
E-mail : (1) min-education@gujarat.gov.in (2) bupendrasinhm@gmail.com

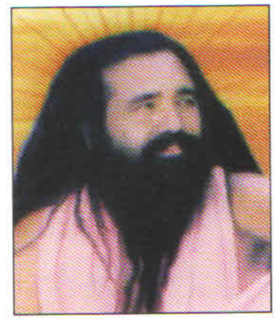

शुभाशीर्वचनम्

समादरणीया: विद्वद्वरेण्या: ।

यतो यत: समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।

शं न: कुरु प्रजाभ्योऽभयं न: पशुभ्य: ।।(शु. ३६/२२)

परमपूज्यतमा: सद्गुरुसम्प्राप्तविद्याविशारदा: शिष्यप्रदत्तविद्याविस्तृतसुकीर्तयो शास्त्रपरिशीलनसत्स्वभावा: स्वधर्मपरिपालनप्राप्तसुयशस: सच्चारित्र्यशालिन: परमदयालवो राष्ट्रसेवापरायणा: वेदविद्याधीतगुरव: महानुभावाश्च, एतस्मिन् शुभावसरे परमदिव्यचेतनास्वरूपश्रीसन्ध्यागिरी (बापू) महाराजं मम सद्गुरून् स्मारं स्मारं प्रसन्नतामनुभवामि ।

महत: हर्षस्य गौरवस्य च विषयोऽयं यत् तिसृभि: सम्मिल्य सङ्घे शक्ति: कली युगे इति सार्थकीकुर्वन्त: त्रिवेणीरूपवेदशास्त्रसङ्गोष्ठीस्मरणिकाप्रकाशनपवित्रकर्मणि रता: भवन्त: सर्वेविद्वांस: धन्यवादार्हा: । एतद्भवतां ममोपरि महदृणं वर्तते । तस्मादृणान्मां मोचितुं प्रकारेणाहं समर्थोनास्मि । तथापि वेदशास्त्रसङ्गोष्ठीकृतमन्थन (संशोधन) प्राप्तप्रसादरूप (स्मरणिका) पत्रिनामकं ग्रन्थं भवतां सर्वेषां साह्येन पूज्यपादश्रीसन्ध्यागिरिगुरुवर्याणां करकमलेषु समर्प्यांशतोऽप्यात्मनो मुक्ति: कर्तव्येति बहुसमयात्सञ्जातशुभाकाङ्कायुतो बालिशतां प्रदर्शयितुं प्रवृत्तो भवत्कृतोपकारस्मरणसञ्जातहर्षाश्रुभि: क्लिन्नचक्षुर्ग्रन्थमिमं भवद्भ्यो विद्वद्वरेण्यचरणकमलेभ्यो समर्प्याहं मां कृतकृत्यं मन्ये । मन्येऽयं ग्रन्थ: वेदवेदाङ्गस्य संस्कृतभाषाया: प्रचाराय, प्रसाराय, च मानवजीवनकल्याणाय, जनहिताय, चापि प्राणीमात्रमङ्गलाय, जिज्ञासूनाञ्च कृते महते उपकाराय भविष्यतीति अखिलभारतीयवैदिकसम्मेलने भक्तिज्ञानकर्मपारावारीणानां परमतत्त्वपारदेश्वनां परमसाधूनां गुरुचरणानां दिगन्तविततसुयशसां पुण्यस्मृतौ ग्रंथस्वरूपश्रद्धापुष्पमिदं समर्प्यते मया ।

अनेन मम जीवनसाफल्यं भवेदिति आशासे एतं वेदसंरक्षणशिवसङ्कल्पं भवद्वयं विज्ञाय मोदते मे स्वान्तम् । अन्ते च वैदिकजगत: सश्रद्धां सेवां चिकीर्षु: तथाा च स्मरणपुस्तिका निर्मिमिपुरहं परमतत्त्वं प्रणम्य भवद्भ्य: सर्वेभ्य: धन्यवादान् वितीर्य सेवकेभ्य:, भक्तेभ्य:, सहायकेभ्यश्च, शुभाभावनां प्रदाय स्वान्त:करणे निजानन्दं अनुभवन् कामये शुभं सर्वेषामिति शम् ।

विद्वच्चरणकिङ्कर:–

–भगवत्सेवक: भगवत्गिरि:

Shree Somnath Sanskrit University

(Estd. by Government of Gujarat)

Rajendra Bhuvan Road, VERAVAL-362 266
District : Gir Somnath, Gujarat, INDIA
Phone : 02876 - 244531 • Fax : 02876 - 244417

Prof. Ark Nath Chaudhary
Vice - Chancellor

Date : २८-०८-२०१७

Ref. : ससयु/कुलपतिः/१०८/२०१७

शुभाशंसनम्

श्रीसोमनाथसंस्कृतविश्वविद्यालय-सन्तश्रीसन्ध्यागिरिबापुसंस्कृतवेदविद्यालययोः संयुक्ततत्त्वावधाने महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रीयवेदविद्याप्रतिष्ठानस्यार्थिकयोगदानेन एका अखिलभारतीया वेदसंगोष्ठी "कर्मकाण्ड एवं संस्कारविज्ञान" इति शीर्षकेण ११-१३ सितम्बर २०१७ तिथिषु आयोज्यमाना वर्तते। संगोष्ठ्यामस्यां भारतीयकर्मकाण्डं संस्कारविज्ञानञ्चाश्रित्य नैके लब्धप्रतिष्ठाः विद्वान्सः शोधपत्रवाचनं करिष्यन्ति। कर्मकाण्डस्य संस्कारस्य च महत्त्वं भारतीयजनमानसे अनादिकालादेव विद्यमानं वर्तते, तत्र वैज्ञानिकत्वं किमिति पक्षमपि आदाय वेदशास्त्रीया तत्सम्बद्धा च चर्चा नितरां जिज्ञासूनां लाभाय स्यादिति विभावये।

संगोष्ठ्यां भागं जिघृक्षुभ्यः प्राप्तानि शोधपत्राणि पत्रिकारूपेण प्राकाश्यं नीयमानानि इति विदित्वा भृशं मोदे।

अहमस्याः संगोष्ठ्याः संयोजकाय डॉ. शत्रुघ्नपाणिग्राहीति नामधेयाय सन्तश्रीसन्ध्यागिरिबापु-संस्कृतवेदविद्यालयस्य अधिकारिभ्यश्च पत्रिकाप्रकाशनरूपमहत्त्वपूर्णकर्मणे स्वकीयं शुभाशंसनं प्रकटये।

श्रीसोमनाथः मङ्गलमातनोतु।

प्रो. अर्कनाथ चौधरी
(कुलपतिः)

प्रति,
शत्रुघ्नपाणिग्राही
संयोजकश्री,
अखिल भारतीय वेदसङ्गोष्ठी,
श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय,
राजेन्द्रभुवन रोड, वेरावल, गीर-सोमनाथ

Phone : (R) 02876-244530, (M) 094266 87450, - 08462830055
Email : vc.sssuni@gmail.com, choudharyarknath@gmail.com

Dr. Babasaheb Ambedkar Open University
(Established by Government of Gujarat)

Jyotirmay Parisar,
Opp. Shri Balaji Temple, Sarkhej Gandhinagar Highway,
Chharodi, Ahmedabad-382 481, Gujarat
Phone : 02717-297170 | Fax : 02717-297144

Dr. Pankaj L. Jani
Vice-Chancellor

शुभेच्छा संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्रीसोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान तथा सन्तश्री सन्ध्यागिरी बापु संस्कृत वेद विद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में सितम्बर दिनाङ्क ११-१३, २०१७ को कच्छ में "कर्मकाण्ड एवं संस्कार विज्ञान" पर "अखिल भारतीय वेदसङ्गोष्ठी" का आयोजन हो रहा है।

वेद अखिल ब्रह्माण्ड के ज्ञान दीप है और भारतीय संस्कृति का मूल आधार हैं। उसका प्रचार प्रसार करना अत्यन्त आवश्यक हैं। अतः कच्छ क्षेत्र के लोगों के मन में वेदभगवान के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करने हेतु यह प्रयास उपयुक्त हैं। इस अखिल भारतीय वेदसङ्गोष्ठी की सफलता के लिए तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामना करता हूँ।

(डॉ. पङ्कज एल्. जानी)
कुलपति

प्रति
डॉ.शत्रुघ्न पाणिग्रही
संयोजकश्री
अखिल भारतीय वेदसङ्गोष्ठी

Email : baouvc@gmail.com | Website : www.baou.edu.in | Mo : 9825140363

Krantiguru Shyamji Krishna Verma

Kachchh University

Mundra road,
Bhuj-Kachchh. Pin no: 370001
Email: - info@kskvkachchhuniversity.org

Phone no: (02832) 235001
Fax no: 235012
web: kskvku.digitaluniversity.ac

Ref:K.U./VCO/2016

Date: 01/09 /2017

परमश्रद्धेय संतश्री भगवद्गिरि बापु के आशीर्वाद से

तत्प्रतिष्ठापित संध्यागिरि बापु संस्कृत वेद विद्यालय एवं श्रीसोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में कच्छ की धरा पर अखिलभारतीय वेद संगोष्ठी का आयोजन हो रहा यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ।

वेदोऽखिलो धर्ममूलम् इस बात चरितार्थ करते हुए, वेदनिहित सामाजिक मूल्यों का पुनरुद्धाटन अपेक्षित है। हमारे संस्कार व यज्ञसंस्था का वैज्ञानिक पहेलू समाज के सामने ला कर आप भारतीय संस्कारों को वैश्विक स्तर पर गरिमा प्रदान कर सकें यही शुभाशंसा।

इस संगोष्ठी में समस्त भारत से कच्छ की सिन्धुकालीन भूमि पर आ कर जो विद्वद्गण अपना संशोधन प्रस्तुत आयेंगे उन्हें कच्छ की प्राचीनता व अस्मिता से भी परिचित कराने का उपक्रम होगा ऐसी आशा करता हूं। इन कृतभूरिपरिश्रम विद्वानों के संशोधनों से भारतीयता का गौरव बढे, वैदिक परिवेश वैश्विक परिवेश के रूप में स्वीकृत हो एवं हमारे संस्कारों के पीछे निहित वैज्ञानिक अभिगम से समाज परिचित हो यही शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

जय सोमनाथ

(डॉ. सी.बी. जाडेजा)

Shree Somnath Sanskrit University
(Estd. by Government of Gujarat)

Rajendra Bhuvan Road, **Veraval-362 265.** Dist. Gir-Somnath (Gujarat)
Phone : 02876 - 244529 Fax : 02876 - 244417
E-mail : sssu.registrar@gmail.com & madave9k@gmail.com
Website : shreesomnathsanskrituniversity.info
Mob. : 9898 478 472 - 94093 72247

Dr. Mahendrakumar A. Dave
Registrar (I/C)

Ref. No. :

Date :

शुभासंशनम्

श्रीसोमनाथसंस्कृतविश्वविद्यालय सन्तश्रीसन्ध्यागिरी बापु संस्कृत वेदविद्यालययोः संयुक्ततत्वावधाने एवं महर्षिसान्दीपनि राष्ट्रीयवेदविद्याप्रतिष्ठान उज्जैनस्य आर्थिकेनसाहाप्येन ''कर्मकाण्ड एवं संस्कार विज्ञानम् ''इत्यस्मिन् विषये वेदसङ्गोष्ठी आयोज्यमाना वर्तते । अस्मिन् वैदिकयज्ञे अनेके विद्वांस : महत्वपूर्णानि वैज्ञानिकानि शोधपत्राणि प्रस्तौष्यन्ति तेषु मन्थनं कृत्वाऽतिव महत्वपूर्णानां शोधपत्राणां सङ्कलितोऽयं ग्रन्थः न केवलं संस्कृतजगत्येव किन्तु सम्पूर्णसंसारे लाभप्रदः भविष्यति – इति मम विश्वासः वर्तते ।

वेदोऽखिलो धर्ममूलमुक्त्वा मनुना वेदस्य अनन्यत्वं प्रतिपादितम् । वैदिकैः मंत्रैः वातावरणे सात्विकी उर्जां उत्पन्ना भवति । तदर्थमेव कर्मकाण्डम् एवं संस्कारविज्ञानं लक्षीकृत्य आयोजितः अयं ज्ञानयज्ञः सफलः भवेत् तादर्शी शुभकामनां ददामि ।

डो. महेन्द्रकुमार अं. दवे
का.कुलसचिव

Shree Somnath Sanskrit University

(Estd. by Government of Gujarat)

Rajendra Bhuvan Road, **Veraval - 362 266.** District : Gir -Somnath. (Gujarat)
Ph. : 02876-244532 Fax : 02876-244417, E-mail : sssu.veraval@gmail.com
Website : www.shreesomnathsanskrituniversity.info

Ref No.

मङ्गलाशंसनम्

परमानन्दप्रदोऽयमस्ति शैक्षणिकस्पन्दनविषयो यदैषमे वर्षे श्रीसोमनाथसंस्कृतविश्वविद्यालय-सन्तश्रीसन्ध्यागिरिबापुसंस्कृतवेदविद्यालययोः संयुक्ततत्त्वावधाने, राष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानद्वाराऽङ्गीकृत- वित्तपोषणैकाऽखिलभारतीया वेदसङ्गोष्ठी – कर्मकाण्ड-संस्कारविज्ञानमाश्रित्य आयोज्यते सितम्बरमासस्य ११-१३ दिनाङ्केषु । "वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ता" – इति लगधोक्तिः जगतः सम्पूर्णान् क्रियाकलपान् संस्कारसामान्यान् संस्कारविशेषान् च यज्ञविद्यामाध्यमेनैव प्रमाणयति शास्त्रनिहितान् । ब्रह्माऽपि वेदैरेव समस्तैः जगतः सृष्टिं विधत्ते । सृष्टौ च यानि श्रौतकर्माणि वेदनिहितानि सन्ति संस्काराश्च ये विविधाः स्मृतिषु प्रोक्ता सन्ति तेषां सारत्त्वमुपगृह्य प्रवर्तितेयमखिलभारतीया संगोष्ठी ।

अस्यां संङ्गोष्ठ्यां मन्ये वेद-ज्ञानविज्ञानविषयाः शोधपत्रमाध्यमेनोपस्थापिताः भविष्यन्ति । शोधपत्राणां प्रकाशनस्य योजनाऽप्यस्याः सङ्गोष्ठ्याः कार्ययोजनायामस्ति, सन्तश्रीसन्ध्यागिरि बापुसंस्कृत वेदविद्यालयमाध्यमेनेति ज्ञात्वा हर्षमनुभवामि ।

अस्याः संङ्गोष्ठ्याः साफल्याय वेदविभागीयवेदविद्वांसं, सङ्गोष्ठ्याः संयोजकं डॉ. शत्रुघ्न- पाणिग्राहीमहोदयं शुभाशंसनेनाङ्लं करोमि । तथैवात्र कार्यक्रमे आगन्तुकामानां वेदविदुषां, कार्यक्रमानुष्ठाने व्यापृतानां सर्वेषां विदुषां महानुभावानां छात्राणां विश्वविद्यालयीय सदस्यानाञ्च कृतेऽहमाभारमभिव्यनज्मि ।

दे. ना. पाण्डेय

प्रो. देवेन्द्रनाथपाण्डेयः
अध्यक्षः
वेदविभागस्य

सम्पादकीयम्

योब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ।

तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं ममुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये ।। श्वेताश्वतरोपनिषद्–६, १८

अत्रौपनिषदिके मन्त्रे भगवतो नारायणरूपस्य वेदस्यापौरुषेयत्वं, निर्मलत्वं नित्यस्वरूपञ्च तन्मार्गेणैव प्रत्यपादि प्रमाणनिरपेक्षरूपया श्रुत्या । अस्य तात्पर्यं प्रतिपादयता स्वामिकरपात्री जी महाराजेन प्रोक्तमस्ति यत् ब्रह्मणोपि विधात्रा परमेश्वरेण ब्रह्मा विधीयते, न वेदा विधीयन्ते । किन्तु नित्य सिद्धा एव ते ब्रह्मणो हृदि प्रहीयन्ते, प्रेष्यन्ते । विद्यमानानामेव प्रेषणं सम्भवति । तन्निर्माणसंभवे ब्रह्मनिर्माणप्रसंगे तन्निर्माणमपि वक्तव्यं स्यादेवेति ।

अनेन प्रकारेणैतत्सिद्धं भवति यत् वेदैरेव सर्वैः ब्रह्मा ब्रह्माण्डं रचयति । तादृग्वैदिकसाहित्यं, संसारस्य व्यवहारप्रचालनाय, राष्ट्रनिर्माणाय, राष्ट्रे व्यक्तिनिर्माणमाध्यमेन समाजनिर्माणाय, भारतीयसंस्कृतेः पुरुषार्थावाप्तये, विश्वबन्धुत्वोपदेशफलमाध्यमेन विश्वशान्तिस्थापनाय, सर्वजीवजीवनमूल्यावगमनहेतवे, भारतीयसंस्कृतेः वैज्ञानिकस्वरूपप्रतिष्ठारक्षणाय च कियन्महत्वपूर्णं वर्तत इति वयं ज्ञातुं शक्नुमः ।

एतदप्यस्माभिरवगन्तव्यमस्ति यत् विश्वस्मिन् बहूनि पैरुषेयाणि साहित्यानि सन्ति प्रणीतानि येष्वस्य वैदिकसाहित्यस्य सैद्धान्तिकी छाया अवलोक्यते ।

अस्य वैदिकसाहित्यस्यार्षत्वात्प्रकृतिप्राङ्गणप्रादुर्भावविकासकारणाच्च सर्वविद्याजनकत्वं विश्वधर्मसूत्र–सूत्रधारकत्वमपि स्वयमेव सिध्यति । तस्मादेव कारणादस्य साहित्यस्यार्षसन्देशं जनान्प्रति सम्यक्प्रापयितुं तद्रक्षणार्तञ्च षडङ्गान्यपि यथाकालम् ऋषिभिः रचितानि । नास्ति तादृग्व्यवस्था विश्वस्मिन् कस्यचिदपि प्राचीनसाहित्यस्य रक्षणाय । अत एतत्सिध्यति यत् वैदिकसाहित्यं वैश्विकसृष्टिप्रपंचज्ञानाय विश्वरिक्थमस्तीति । पूर्वपाश्चात्यसाहित्यसमालोचनपयुपण्डितैरप्येतद् आर्यावर्तस्यापौरुषेयं साहित्यं बहुप्रशंसितमुदारहृदयेनोदारभावमत्र वीक्ष्य वौदिक–साहित्ये । कर्मज्ञानोपासनाकाण्डविषयभरितमेतद्वैदिकसाहित्यं विश्वकल्याणाय सुरक्षितम्, विकसितञ्चानुदिनमस्त्विति धिया मध्यप्रदेशस्य उज्जैननगर्यामेकं राष्ट्रियवयेदविद्याप्रतिष्ठानम् स्थापितं जातमस्ति भातरसर्वकारेण । तुद्देश्यालोक एवेयमायोजिता त्रिदिवसीयाखिलभारतीया वेदसंगोष्ठी । इयं संगोष्ठी श्रीसोमनाथसंस्कृतविश्वविद्यालय **महाविद्यलययोःसंयुक्तोपक्रमे** सम्पन्ना जाता, यस्यां संगोष्ठ्यां कर्मकाण्डसंस्कारविज्ञानमिति विचारालोके बहूनि शोधपत्राणि विभिन्नप्रदेशेभ्यः समागतैः विद्वद्भिः प्रस्तुतानि त्रिषु दिवसेषु । तथैव सम्बद्धविषयमधिकृत्य गभीरविचारोऽपि जात इति सन्तोषस्य विषयः । एतत्सर्वं परमपूज्यानां स्वामिवर्याणां कृपया व्यवस्थया च जातमिति तान् प्रति प्रणतास्ति आयोजनसमितिः । जयतु सोमनाथः ।

भवदीय

डॉ. शत्रुघ्नपाणिग्राही

श्रीसोमनाथसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वेरावलम्

प्रास्ताविकम्

समानी व आकृति: समाना हृदया नि व: ।

समानमस्तु वो मनो यथा व:: सुसहा सति ।।(ऋ. १०/१९१/४)

श्रीमद्भगवञ्चरणसरोरुहेषु तथा च पूज्यश्रीमगतिरिबापूचरणकमलेषु सादरं विलसन्तु मे प्रणतिपतय: । अस्यां वेदसङ्गोष्ठ्यां वेदसंशोधनकर्मणि वेदशास्त्रमन्थनप्रदत्तमानसकर्मसु मिलिन्दायमानसा विद्वास: ।

श्रीसन्ध्यागिरिवेदविद्यालय समारवीयाली (कच्छ कोटेकाशी) गुजरात, श्रीसोमनाथसंस्कृतविश्वविद्यालय:, वेरावलम्, गुजरात, श्रीमहर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानं उज्जैन, द्वारायोजिता वैदिकसङ्गोष्ठी अखिलभारतीयवैदिकसम्मेलनञ्च इति जानन्त्येव तत्रभवन्तो यद् इयं वेदसङ्गोष्ठी अखिलभारतीयवैदिकमहासम्मेलनम् अस्माकं विदुषां लोकानाञ्च कृते कियदुपकारकमिति ।

अनया सङ्गोष्ठ्या वेदमन्त्रश्रवणमाध्यमेन वैष्णवा विष्णुं, शैवा: शिवं, शाक्ता: शक्तिं, गाणपता गणपतिञ्च स्तुत्रा मनस्तोषमभीष्टप्राप्तिं (एकेन विज्ञातेन सर्वं विज्ञातं भवति) ओल् इन् वन् (सर्वमप्येकस्मिन्) च शक्ष्यन्ति । अनेन सम्मेलनेन 'स्मरणिकया' च वहवो भक्ता: समुपस्थितानुपस्थितजनाश्च कृष्णरामादीनिष्टदेवान् परितोष्यैहलौकिकं पारलौकिकञ्च कल्याणं साधयितुं समर्था: भवेयु: । अनेके भक्ता: अनया (सङ्गोष्ठ्या) स्वजीवनधारासु समुत्तार्य जगति बहूनां प्राणिनां कृते उपकारं विधास्यन्ति इति निश्चप्रचं नात्र सन्देहावकाश: ।

चतुर्वेदान्तर्गतज्ञानजीवनोपयुक्तमतिसामान्यं परिचाययितुमुदग्रतथाऽयमुपक्रम: सर्वथा नूतन: एव सारल्यजृम्भितं वरीवर्ति ।

अनया स्मरणिकया वेदानां सामान्यावबोधविसंष्ठुल: प्रविवित्सुरवश्यं कृतकार्यतामेष्यतीति । वेदमाध्यमेन परमात्मानं जिज्ञासव: वेदं पिपठिषव: स्वाभ्यासेन दृढीकरिष्यन्त्येव । पू. भगवत्गिरभि: कृतेन अनेन शुभकर्मणा मोमुदीति मे मन: ।

अत्र विशेषेण अभिनन्द्यन्ते एते महानुभावा: पू. डॉ. अर्कनाथचौधरीकुलपतिमहोदयेभ्य:, श्रीमहामहीम ओ. पी. कोहलीराज्यपालमहोदयेभ्य:, (गुजरात) श्रीमहामहीमवजुभाईवालाराज्यपालेभ्य:, (कर्णाटक) श्रीपङ्कजभाईधारासभ्यमहोदयेभ्य:, श्रीअनिरुद्धभ्रातृभ्य:, श्रीमुलजीभाई आहीरादि ट्रस्टीगणेभ्य: कच्छस्थसर्वविप्रवृन्देभ्य:, श्रीरमेशभ्राता, श्रीविपुलभ्राता, श्रीप्रज्ञेशभ्राता, श्रीमोहनभ्राता, श्रीकेवलभ्रातादि आचार्येभ्य: हार्दं हार्दं स्मारं स्मारं सादरमभिनन्दनं पाठयाम: ।

तिसृभि: संस्थामि: कृतेऽस्मिन् महायज्ञे येन केन प्रकारेण प्रदत्ताहुतीसेवकान् धन्यवादान् दद्म:। अस्यां स्मरणिकायां प्रदत्तविषयै: लेखैश्च नूनं कल्याणमेव भवेदिति आशासे । सर्वेषां शुभसङ्कल्पं सेत्स्यति अनेन अखिलभारतीयवैदिकमहासम्मेलनेन इति भद्भावं प्रकट्य पू. भगवत्गिरिमहाराजान् प्रणम्य अत्रावसरेव धन्यताम् अनुभवामि ।

भवदीय

डॉ. अश्विन का. राजगोर:

श्रीवरतन्तु सं.म.वि., सोला, अहमदाबाद, गुजरातराज्यम्

परम पूज्य ब्रह्मलीन संत श्री १०८ श्री संध्यागिरिबापु का जीवन चरित्र

वेदान्तवाक्येषु सदा रमन्तो भिक्षान्नमात्रेण च तुष्टिमन्तः ।

अशोकवन्तः करूणैकवन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः।।

कच्छ की पुण्य भूमि पर अनेक महान सिद्ध संत महंत और अवतारी पुरूष भुतकाल मे हो चुके है प्रचलित तीर्थधाम नारायण सरोवर जहाँ प्रचेताओं उग्र तपस्या की थी तथा दादा मेकरणमुंडीया स्वामीबभूतगिरीबापु सुंदरपुरी बापु ज्ञानगिरिजी बापु, योगीराज, धोरम नाथजी, कथल नाथजी, भगवान पुरी बापु और उनके स्वामी साधु-संत कच्छ की पुण्य भूमि पर प्रगट हुए है ।

आज कच्छ की तपोभूमि को हाल मे परम पूज्य श्री संध्यागिरिबापु उग्र तपस्या करके कच्छ को धन्य बना रहे है ।

आज से लगभग ४० वर्ष पूर्व भचाऊ तहसील (तालुका) आधोई गाँव मे आए हुए हनमानजी मंदिर के चोरा उपर एक अवधूत योगी परम पूज्य श्री संध्यागिरिबापु ने आसन को तपा रहे है । मुख्यत्वे कणवी पटेल तथा जैन ओसवालों की बस्ती वाले इस गाँव के लोगों को इकठ्ठा कर बापु को यहाँ के हर एक प्राचीन शिवमंदिर ले गए इस तरह अथोई गाँव की धरती पर पु. बापु की नजर पडी और पुज्य बापु ने गाँव से थोडे दूर एकांत स्थल पर धुणाचेतन करने की इच्छा व्यक्त की और गाँव के भावी भक्तों श्री नारायण भगत, विसनपुरी बावाजी वि. पु. बापु के साथ जंगल की तरफ प्रयाण किया वहाँ गाँव से तीन-चार कि. मी. दूर नरा डेम पास की झाडियों के बीच मे पडाडो को देखा और पू. बापु ने वहाँ रहने की इच्छा व्यक्त की बबुल के झुंड मे पू. बापु ने धुणाचालु किया और फिर पहाडो के बीच मे त्रिशुल लेकर पू. बापुने गुफा खोदने की शुरूआत की फिर तो एक अच्छी सी गुफा तैयार हो गई गुफा के अंदर पन्द्रह से बीस लोग बेठ सके इस तरह की गुफा तैयार हो गई और पूज्य बापु ने हिंगलाज माता की स्थापना करके अखंड धुणा को चेतन किया और पूज्य बापु बैठ गए बारह वर्ष की उग्र तपस्या मे एक भी वस्त्र शरीर पर धारण न करके दिगंबर अवस्था मे तपस्या आरम्भ की ।

गुफा के पास मे ही एक कुँआ खुदवाया वहाँ पर मीठा पानी निकला बाद मे श्री कानजी पटेल दरबार (राजपूत), जैन, चोरवाड भाईओंने आकर श्रद्धालुओंने प्रसाद वितरण की व्यवस्था की पू. बापु कई घंटो तक ध्यान मे रहेते और गुफा मे कोई नही जा सकते थे पूज्य बापु के दर्शन के लिए भक्त कई घंटो तक राह देखते थे ।

एक तरफ से दो कि. मी. दूर नरा गाँव आया हुआ है इस दु:खी गाँव को नंदनवन बनाने की सोची ।

परंतु बारह वर्ष की उग्र तपस्या के बाद बापू अचानक वहाँ से चले गए । गाँव वालोंने तलाश की परंतु बापू का कोई पता नही चला और वहाँ एक दम्पति थे जिनको बापू के प्रति अनन्य भाव था जो नित्य बापू का स्मरण करते करते सो जाते थे एक दिन बापू उनके घर आए और उससे मिले और उनके भक्त लोगों को लगा के बापू हमको भुले नही है । थोडे दिन बाद बापू की कंकोत्री मिली गाँव वाले प्रसन्न हुए फिर बापू पेथापुर मे कथा सप्ताह का आयोजन किया और सभी भक्तों को बुलाकर लाभ प्राप्त करवाया इसके बाद बापूने हरियाणा, हिमालय, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, उज्जैन अदि शहेरों मे कथा का आयोजन किया । फिर पास वाले गाँव नरा को नवल्लवीत करने का विचार दृढ निश्चय और उनके पूर्व संत विभूति प. पू. बभूतगिरिबापु ने भी बहुत तपस्या की और गायों की सेवा की थी बापू ने वहाँ पर एक शिवालय की स्थापना की और प्रतिष्ठा निमिते वो शिवकथा का आयोजन कर भारत के सभी साधू-संतो को बुलाया और महाभंडारा किया सभी के लिए भोजन प्रसाद की व्यवस्था की लेकिन यह सब कहा से आया ये विचार जरूर आयेगा परंतु-

संत की गति अटपटी सह पर लीख नव जाय ।

भीदे जो मन की खयपटी तो झट पट दर्शन थाय ।

बरसात के समय में सप्ताह का आयोजन किया था । किन्तु सप्ताह का सम्पूर्ण कार्य निर्विघ्न में सम्पूर्ण हुआ और आज तक इतने सारे साधू-संतो का मेला आज तक कच्छ की भूमि पर नही दिखा ।

इसमे लाखों रुपयों का दान साधू-संतो को भेट किया गया और इसके बाद नरा गाँव का श्री गणेश हुआ और आज नरा गाँव समृद्धि से भरपूर है ।

हलवद गाँव से बापु ने आश्रम की स्थापना की ब्राह्मणोने भी खुब सेवा की बापू की और बापू की एक गिरनारी ब्राह्मण पर कृपा दृष्टि हुई और नगरपति बन गये जब उनका कैलासवास हुआ तो बापू स्वयं वहाँ जाकर गिरनारी की मूर्ति बनाई और उस प्रतिमा को लोग आज भी पूजते है । इसके बाद लोगों ने बापू के साथ चातुर्मास करने का विचार किया बापू ने कच्छ में जोगणीनार माताजी के यहां चातुर्मास किया और बापू वापस उस गुफा मे चले गए और एक बार बापू ने सामखीयाली मे लाकडिया तीन रस्ते के पास एक जगह पसंद की वो जमीन एक मुसलमान की थी उमरभाई की । उमरभाई ने नि:संकोच निजी जमीन बापू को जितनी चाहिए थी उतनी दे दी बापूने उमरभाई को दाम मांगने को कहाँ पर उमरभाई ने कहा बस मुझे तो आपका आशीर्वाद चाहिए और उसके बाद उमरभाई गाडी, बंगला और करोडो की संपति के मालिक है और भी उमरभाई बापू के हर प्रसंग मे पधारकर यथा शक्ति दान प्रदान करते है ।

सन १९८६ मे चोखंडा महंत श्री ज्ञानगिरि दयालगिरि देव हुए तुणा गांव मे भंडारे मे पू. बापू स्वयं पधारे यह देखकर सबने बापू को प्रणाम किया बापू ने दीपप्रागट्य किया हमेशा बापू अपनी गाडी वरराजा के लिए देते थे और अंतिम मे पू. बापु की सेवा का लाभ वर्तमान संत पू. बापु के शिष्य प. पू. भगवतिगिरि को पू. बापू ने हाईवे रोड का गिरनारी आश्रम को सौंपा । पूज्य बापूने गिरनारी आश्रम में कायम हरी हर हो, साधु-संतो की सेवा हो, इसलिए आश्रम का हिसाब ठाकरशी ठक्कर कों सोंप दिया आश्रम का व्यवहार सोरठीया भाई को सौपकर बापू ने स्वयं के अवतार का कार्य पूरा हो रहा है इसी संकेत के साथ माया के जाल मे फसा हुआ माना ।

एक दिन अचानक बापू आश्रम के सभी सेवकों की हाजरी में सभी को काम सोंप दिए संवत २०५४ को भाद्रपद मास कृष्णपक्ष की आष्टमी तिथि बुधवार को २५-९-१९९७ की सुबह बापू ९:१५ मिनट पर आस लगाकर हमेशा के लिए समाधी मे बैठ गए । इसके बाद बापू का आश्रय पू. भगवतिगिरिबापु ने संभाला ऐसे पूज्य बापू के समाचार सुनकर सभी साधु-संत, सेवक दिग्मूढ बन गए । सभी के आँसू फूटने लगे और बापू के अंतिम दर्शन के लिए पू. बापु का नश्वरदेह सुशोभित पालकी मे तैयार करके ऐसे पालकी जो पहेले कही पर न निकली होगी ४-४ कि. मी. तक को वाहन थे बस, ट्रक, कार वगेरे जिसमे हजारों की संख्या मे लोग हाजिर थे साधु, संत, भक्त, सेवक सभी जय गिरनारी, जय गिरनारी का नाद कर रहे थे और पालकी ७:१५ पठावीडी, अंजार, आदिपुर, शिणाई, माथक, संघड, वलाडीया से होकर दोपहेर १:१५ तक पू. बापू के नश्वरदेह को साधु-संतो के हस्त से पूज्य बापू की समाधि विधि कर नश्वरदेह को हजारों सेवकों द्वारा अंतिम जय गिरनारी का घोष किया गया, भंडारे के दिन भारत भर के साधु-संतों ने पधार कर ब्रह्मचारीबापु को पूज्य बापु की समाधि और शिष्ट बनाने की विधि तथा पू. बापु के शिष्य स्वरूप भगवति गिरि का गुरुसंध्यागिरिबापु ऐसा नामकरण कर चादर विधि सम्पन्न की ।

भगवतिगिरिबापु ने तीन महिने तक समाधि पूजा की, बाद मे गिरनारी आश्रम, सामखियाली पर आ बसे ।

प. पू. ब्रह्मलीन संत श्री संध्यागिरिबापु के आश्रम पट्ठापीडी मध्ये हर वर्ष के वार्षिकोत्सव मेला तथा यज्ञों अषाढ शुक्ल-२ (अषाढी बीज) गुरू पूजन अषाढ शुक्ल-१५ (गुरू पुर्णिमा) पू. बापु की तिथि भाद्रपद कृष्ण नवरात्रि - दुर्गाष्टमी, महाशिवरात्रि - शिव महापुजा की ।

भवदीय

भगतत्सेवक भगवतिगिरि

गिरनारी आश्रम

पू. बापू के कैलासगमन के बाद भी पू. बापू शाश्वत है उसका एहसास अक्श भक्तों को हाता रहता है ।

गिरनारी आश्रम में भगवतिगिरिबापु ने पू. बापू के बताये मार्ग पर चल पडे भगवतिगिरि बापु ने दों वर्ष तक आश्रम से बाहर पैर न रखने का व्रत लिया और आश्रम मे भजन करने की शुरुवात की पू. बापू ने सामखीयाली गिरनारी आश्रम के प्रति तथा पू. भगवतिगिरि बापु के प्रति अगाढ प्रेम था । पू. संध्यागिरिबापु अंत मे भगवतगिरि की सेवा से बहु संतुष्ट हुए और आशीर्वाद दिया इसके बाद उनके असंख्य सेवक हे जिनका नाम लिखने जाए तो लगभग किताब के पन्ने भी कम पड जाए ।

पूज्य संध्यागिरिबापु ने भी ज्यादा कायदा विकसित ऐसा वागड विस्तार को दिया है पू. बापु की सेवा का लाभ जिन–जिन को भी हुआ है वो धन्य है पू. बापू तो त्यागी स्वयं शिव अवतार थे जिनके दर्शन मात्र से लोगों के दुःख दूर हो जाते थे ।

पू. बापु ने व्रत के दरमियान भी जब गुजरात मे भूकंप आया तो बापू ने हर एक गरीब की मदद की खाद्य सामग्री से लेकर हर छोटी से बडी समस्या का हल निकालकर लोगों को भय से दूर किया ।

आश्रम के धार्मिक कार्यक्रम –

महाशिवरात्रि – शिव महापुजा

गुरु पूजन – आषाढ शुक्ल–१५ (गुरुपूर्णिमा)

पू. बापु की निर्वाण तिथि – भाद्रपद कृष्ण –८

चामुडा माताजी का मेला तथा हवन – आश्विन कृष्ण –८

(चामुण्डा माताजी के मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव)

आदि उत्सव ब्रह्मचारी बापु के सानिध्य मे होते है पू. ब्रह्मचारी बापु भविष्य में एक संस्कृत पाठशाला का निर्माण हो छात्रों को रहने, खाने, अभ्यास की सभी व्यवस्था मिले जिससे इक्कीसवी सदी मे भी कोई गरीब शिक्षा से वंचित न रहे ऐसा पू. ब्रह्मचारी बापुका संकल्प है इस तरह पू. श्री १०८ संध्यागिरि बापु के विषय मे जितना कहा जाए उतना कम है महासागर मे से बुंद भरने जितना हो । पू. संध्यागिरि बापु तो साक्षात् शिव का अवतार थे और पू. बापू को साष्टांग प्रणाम करके सभी सेवकगणों को जय गिरनारी ।

प. पू. संध्यागिरि बापु की प्रेरणा से तथा पू. भगवतिगिरि (ब्रह्मचारी बापु) के जीवन विषय पर चार शब्द लिखे है इसमे कोई भी शब्दिक क्षति रह गई हो तो क्षमा करना ।

जय गिरनारी

डॉ. अश्विन का. राजगोरः

श्रीवरतन्तु सं.म.वि., सोला, अहमदाबाद

गिरनारी एज्युकेशन एण्ड चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित

संतश्री संध्यागिरिबापु संस्कृत वेद विद्यालय–सामखीयाली

संस्था के उद्देश्य और प्रवृत्ति

संस्था के उद्देश्य –

यह संस्था आज के युग मे पाश्चात्य संस्कृति, भारतीय संस्कृति और उसकी सभ्याता उसके गुणो, ऋषि जीवन शैली, अध्ययन शैली, गायों के योगदानों को समझना, अनुभव करना और उनको जीवन मे उतारकर सुखी: प्रेम, करुणा, इंसानियत, कुटुंब की जिम्मेदारी समाज के लिए जवाबदारी, राष्ट्र के लिए जवाबदारी और विश्व के प्रति जवाबदारी समझकर कर्तव्य निष्ठ बनकर "वसुधैव कुटुंम्बकम्" की भावना से भारत देश विश्वगुरु बनने के लिए अग्रेसर हो रहा है तो संस्कृत विद्या और संस्कृति के विकास के उद्देश्य को लेकर कार्यन्वित है ।

संस्था की प्रवृत्तियाँ –

उपरोक्त उद्देश्य को ध्यान में लेकर आई यह संस्था संतश्री संध्यागिरि बापु संस्कृत वेद विद्यालय संतश्री संध्यागिरि बापु गौशाला इसी तरह, संतश्री संध्यागिरि बापु अन्नक्षेत्र के माध्यम से नीचे की प्रमाणिक प्रवृत्तियां करती है ।

(१) संतश्री संध्यागिरि बापु संस्कृत वेद विद्यालय –

इस संस्कृत वेद विद्यालय के माध्यम से संस्था लगभग १०० विद्यार्थीओं की आवास व्यवस्था, निवास और भोजन आदि नि:शुल्क सेवा देकर भाषा के माध्यम द्वारा वेद, उपनिषद, ज्योतिष, पुराण, दर्शन और संस्कृत साहित्य का ज्ञान दिया जाता है । जिसके माध्यम से विद्यार्थी आगे जाकर देश और समाज को बहुत उपयोगी हो ऐसी प्रवृत्तियाँ यहाँ पर करवाई जाती है ।

(२) संतश्री संध्यागिरिबापु गौशाला –

यह गौशाला में भारतीय देशी गायों का संरक्षण और संवर्धन हो, और गाय के दुध, दही, घी, गोबर और गौमत्र मे रहे दृष्ट धार्मिक, शारीरिक और मानसिक लाभ सामान्य लोगों तक पहुँच सके और ज्यादा से ज्यादा लोग लाभान्वित बने और अच्छे हेतु से ये संस्था ६५० गायों को १० एकड जमीन मे गौशाला बनाकर पालन पोषण कर रही है । गाय ये पशु नही पर ईश्वर की मनुष्य जाति के लिए दी गई अमूल्य भेट है क्योंकी इससे मनुष्य जाति का सर्वांगीण परिपोषण होता है और इससे ही भारतीय शास्त्रों में गाय को माता का दर्जा दिया गया है सभी लोग गाय को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझे इसके लिए भी ये संस्था कार्यरत है ।

(३) संतश्री संध्यागिरिबापु अन्नक्षेत्र –

इस अन्नक्षेत्र के माध्यम से ये संस्था यात्री, साधु, संतो, गरीब लोगों को भोजन, चाय, नास्ता अदि व्यवस्था करके समाज को मददगार हो रही है ।

श्री विपुलभाई शास्त्री

पूर्वाचार्य, सन्तश्री सन्ध्यागिरि बापु,

संस्कृत वेद पाठशाला, सामखीयाली

पारदेश्वर अर्थात् पारे का शिवलिंग का माहात्म्य

मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त रससिद्ध पारे से निर्मित शिवलिङ्ग के दर्शनमात्र से पूर्व जन्म के पापो का नाश होता है और सद्भाग्य का उदय होता है सामान्य पारे का मिलना भी मुश्किल है पारे को जमाने के लिए मुर्छीत खेचरीत किलीत शुंभविजीत् और शौश्चित इस तरह की कठिन प्रक्रियाओं मे से गुजरना पडता है और पारा घन स्वरुप धारण करता है किफर उसमें से शिवलिङ्ग का निर्माण होता है जिस किसी के भी घर मे पारे का शिवलिङ्ग होता है इससे आने वाली कई पीठियों तक रिद्धि–सिद्धि और स्थाई लक्ष्मी प्राप्त होती है ।

शास्त्रो के मत अनुसार रावण रससिद्ध योगी थे उन्होनें पारे के शिवलिङ्ग की पूजा करके शंकरभगवान को पूर्णरूप से प्रसन्न करके स्वयं की नगरी को सोने की बनाने में सफल हुए थे ये एक प्रामाणिक विधान है बाणासुर ने भी पारे की शिवलिङ्ग की पूजा करके मनवाच्छित वरदान प्राप्त किया था इस वार्ता का उल्लेख रुद्रसंहिता मे है नीचे कितने ही महत्त्वपूर्ण प्रमाणिक ग्रंथो का विवरण दिया गया है इसे स्पष्ट होता है कि पारे के शिवलिङ्ग का माहात्म्य क्या है

श्री रमेशभाई के. जोषी

आचार्य,

संतश्री सन्ध्यागिरि बापु, संस्कृत वेद पाठशाला,

सामख्याली

अनुक्रमणिका

क्रमांक:	विषय:	नाम	पृष्ठ:
१.	सम्पादकीयम्	डॉ. शत्रुघ्नपाणिग्राही	iii
२.	प्रास्ताविकम्	डॉ. अश्विन का. राजगोर:	iv
३.	परम पूज्य ब्रह्मलीन संत श्री १०८ श्री संध्यागिरिबापु का जीवन चरित्र	भगतत्सेवक भगवतिगिरिबापु	v-vi
४.	गिरनारी आश्रम	डॉ. अश्विन का. राजगोर:	vii
५	संस्था के उद्देश्य और प्रवृत्ति	श्री विपुलभाई शास्त्री	viii
६	पारदेश्वर अर्थात् पारे का शिवलिंग का माहात्म्य	श्री रमेशभाई के. जोषी	ix
७.	वैदिकविज्ञान के अर्थचिन्तन में उपयोगी कतिपय पारिभाषिकपदों का विवेचन	प्रो. अर्कनाथ चौधरी	१-३
८.	उपनयन संस्कार की वर्तमान समय में उपयोगिता	प्रो. कमलेशकुमार छ. चोकसी	४-७
९.	कठोपनिषदि मानवीयजीवनमूल्यसंस्कारमीमांसा	प्रो. जयप्रकाशनारायणद्विवेदी	८-१२
१०.	सामाजिकजीवने उपनयनसंस्कारस्यावश्यकता	डॉ. महेन्द्रकुमार अं. दवे	१३-१७
११.	व्याकरणशास्त्रदृष्ट्या 'गो' शब्दविमर्श:	प्रो. विनोद कुमार झा	१८-२४
१२.	सन्ध्यावन्दनमहत्त्वम्	डॉ. नरेन्द्रकुमार पण्डया	२५-२७
१३.	संस्काराणामाधुनिकयुगे महत्त्वम्	प्रो. अर्चना दुबे	२८-३५
१४.	गोत्वं तस्या: यज्ञे योगदानम्	डॉ. कृष्णप्रसाद निरौला	३६-३७
१५.	ब्राह्मसंस्कारवैशिष्ट्यं स्मृतिशास्त्रे प्रकीर्त्तितम्	प्रो. कमलेशमिश्र:	३८-४१
१६.	भावो हि विद्यते देव:	डॉ. रामराज उपाध्याय	४२-४५
१७.	वेदे स्मृतौ च गोर्महत्त्वम्	आचार्यश्रीरवीन्द्रनाथभट्टाचार्य:	४६-५०
१८.	गोतत्त्वदर्शनम्	डॉ. विश्वनाथस्वाइ	५१-५३
१९.	श्रुतिस्मृतिपुराणादिषु गोर्महत्त्वम्	प्रो. महेन्द्र पाण्डेय	५४-५६
२०.	कर्मकाण्डमहिमा	डॉ. अमृतलाल: भोगयता	५७-५८
२१.	साम्प्रतं सन्ध्योपासनस्यौचित्यम्	डॉ. रामानुज उपाध्याय	५९-६१
२२.	अग्निहोत्र यज्ञ: एक सुपरीक्षित वैज्ञानिक प्रक्रिया	डॉ. भावप्रकाश एम. गांधी	६२-६५
२३.	वेदप्रणीतगृहस्थाश्रमसिद्धान्ता:	राजगोर रविशंङ्कर: कुम्भाभाई	६६-६९
२४.	सामाजिकजीवने उपनयनसंस्कारस्यावश्यकता	डॉ. महेन्द्रकुमार अं. दवे	७०-७२
२५.	वेदेषु शास्त्रेषु च गो: महिमा	डॉ. ललितपटेल:	७३-७५
२६.	धेनोर्महत्त्वम्	डॉ. डायालाल मा. मोकरिया	७६-७८
२७.	वेदेषु गोतत्त्वम्	डॉ. शत्रुघ्नपाणिग्राही	७९-८२

अनुक्रमणिका

क्रमांक:	विषय:	नाम	पृष्ठ:
२८.	वैदिकवाङ्मय में गौ	डॉ. गिरिधारी पण्डा	८३-८४
२९.	अग्निहोत्रम्-एकं परिशीलनम्	डॉ. निरञ्जनमिश्र:	८५-८७
३०.	यज्ञादिकर्मणां ब्रह्मविचारे उपयोग:	डॉ. जानकीशरण: आचार्य:	८८-९१
३१.	दार्शनिकदृष्ट्या यज्ञस्वरूपम्	डॉ. बी. उमामहेश्वरी,	९२-९५
३२.	गो-माहात्म्यम्	डॉ. सङ्कल्पमिश्र:	९६-९९
३३.	वेदे आदर्शदाम्पत्यजीवनम्	डॉ. गिरीजाप्रसाद शडङ्गी	१००-१०४
३४.	वेदे गोमहत्त्वम्	प्रा. डॉ. राजेन्द्रकुमार जे पण्डया	१०५-१०८
३५.	वेद शास्त्रो में गाय	डॉ. अमीषा एच. दवे	१०९-११०
३६.	वेदप्रणीतगृहस्थाश्रमसिद्धान्ता:	राजगोर रविशंङ्कर: कुम्भाभाइ	१११-११४
३७.	संस्कारेषु विज्ञानम्	व्यास पन्नालाल धर्मचन्द	११५-११७
३८.	अग्निहोत्र यज्ञ	श्रीविपुलजादव:	११८-१२१
३९.	समावर्तनसंस्कारस्य माहात्म्यम्	राजपरा मनिष:	१२२-१२४
४०.	श्राद्धतत्त्वम् - कालसर्वस्वोक्तदिशा	शुभश्री त्रिपाठी	१२५-१२९
४१.	अथर्ववेदे गो: विश्वरूपदर्शनम्	हार्दिक: डि कल्याणि	१३०-१३२
४२.	सन्ध्यावन्दनम्	श्री दुर्गाशिरणरथ: (शोधच्छात्र:)	१३३-१३५
४३.	भारतीयसंस्कृतौ गोर्महत्त्वम्	डॉ. दुर्गाचरणषडङ्गी	१३६-१४१
४४.	अग्निहोत्रयाग:	डॉ. अश्विन का. राजगोर	१४२-१४४
४५.	गो-तत्त्वम्, तस्या: यागे योगदानम्, गोर्महत्वञ्च	डॉ. पङ्कजकुमार एस. रावल	१४५-१४९
४६.	शास्त्रपरम्परा में गो माता का विचार	डॉ. प्रशान्तकुमारपण्डा	१५०-१५२
४७.	वेदेषु गोतत्वविचार:	डॉ. ज्ञानरंजनपण्डा	१५३-१५७
४८.	आधुनिकसमाजे यज्ञानां प्रासङ्गिकता	डॉ. सोमनाथदाश:	१५८-१६१
४९.	वैदिक कर्म	पू. स्वामी स्वयंप्रकाशगिरि	१६२-१६३
५०.	अग्निहोत्रयागस्य वैशिष्ट्यम्	जोषी केवल:	१६४-१६५
५१.	Science behind Karmakand -	Prof. D.N.Pandeya	१६६-१७०
५२.	Ved is the Embodiments of Refinement	Shree Rajkishor Ojha	१७१-१७२

वैदिकविज्ञान के अर्थचिन्तन में उपयोगी कतिपय पारिभाषिकपदों का विवेचन

प्रो. अर्कनाथ चौधरी

देश एवं विदेश के मनीषियों ने निर्विवादरूप से स्वीकार कर लिया है कि संसार का आदिग्रन्थ वेद ज्ञान एवं विज्ञान की समृद्धनिधि है । अत एव 'सर्वं वेदात् प्रसिध्यति' का घोष विश्लेषकों द्वारा किया गया । सायण महीधर, उव्वट् दयानन्द सरस्वती आदि विशेषज्ञों ने वेदों की व्याख्याएँ की तथा वैदेशिकों ने भी अर्थविचार किए ।

ऊन्नीसवीं सदी में वेदविद्यावचस्पति पं. मधुसूदन ओझा ने वेदव्याख्यान भाष्य लिखा तथा उनके शिष्य पं. मोतीलाल शास्त्रीने व्याख्यानभाष्य को हिन्दी में प्रस्तुत करने का कार्य वेदविज्ञानभाष्य नाम से किया । आज भी पं. ओझा के व्याख्यानभाष्य से संबन्धितग्रन्थों को समझने के लिए पारिभाषिक शब्दों के अर्थ को जानने की आवश्यकता है । पारिभाषिक शब्द का आशय है कि किसी ग्रन्थ में प्रयुक्त तकनीकी पदावली, जिससे उस ग्रन्थ का अभिप्रेत अर्थ समझा जा सके ।

विज्ञान– पाश्चात्य 'विज्ञानवाद' के सम्पर्क के कारण यह विज्ञान शब्द भौतिक सर्जनात्मकज्ञान से जुडकर अनेक भ्रान्तियों को फैला रहा है । हाइड्रोजन आक्सीजन नाइट्रोजन कार्बन आदि तत्त्वों के संमिश्रणो से सम्बन्ध रखने वाले भौतिक आविष्कारों का वाचक विज्ञान शब्द वेदव्याख्यान के विज्ञान शब्द के समग्र अर्थ को प्रस्तुत नहीं करता है । पं. शास्त्री का मानना है कि किसी निश्चित सिद्धान्तबिन्दु पर पहुँचने के बाद वर्तमान भौतिकविज्ञान तथा भारतीयवेद विज्ञान में विसंवाद नही रह जाता ।

'विज्ञानशब्द' के अक्षरों में भारतीय विज्ञानकाण्ड का विश्लेषण सुरक्षित ह । **'विज्ञान'** शब्द के दो भाग हैं 'वि' एवं 'ज्ञान' । वि उपसर्ग का अर्थ है विशेष, विविध एवं विरुद्ध । इस दृष्टि से विज्ञान शब्द के तीनों अर्थ प्रकरणानुसार शास्त्रों में समन्वित हैं । १. विशेषं ज्ञानं विज्ञानं, २. विविधं ज्ञानं विज्ञानम्, ३. विरुद्धं ज्ञानम् विज्ञानम् । भौतिकविज्ञानवादियों को तीसरा अर्थ भी अभिप्रेत है, क्योंकि उनका विज्ञान कालान्तर में मान्य नहीं रहता है । वेदविज्ञान में विविध ज्ञान तथा विशेषज्ञान अर्थ को स्वीकार किया जाता है, क्योंकि यहाँ विरुद्धज्ञान नहीं है । अत: विज्ञान का पारिभाषिक अर्थ विशेषज्ञान तथा विविधज्ञान है ।

ज्ञान एवं विज्ञान की भिन्नता :–

यदि वैविध्यज्ञान, पृथक्त्वज्ञान या विशेषज्ञान विज्ञान है तो क्या वैविध्यशून्य कोई ज्ञान है ऐसी जिज्ञासा होने पर माना जाता है कि विविध–पृथक्त्वरूप भेदकता से भिन्न एकविध ज्ञान या पृथक्त्व मृत्यु के स्वरूपधर्म है, तथा ज्ञान है । यही विज्ञान तथा ज्ञान में भेद है । ज्ञान अमृतत्व है एवं विज्ञान मृत्युतत्त्व है । इस बात को कठोपनिषद् (१–४–११) ने अधोलिखित शब्दों में प्रस्तुत किया है – **यदेवेह तदमुत्र, यदमुत्र तदत्विह, मृत्यो: स मृत्युमाप्नोति, य इह नानेव पश्यति ।** इस श्रुति में नानाभावों एवं पृथक् भावों का स्वरूपविश्लेषण करते हुए मृत्यु शब्द का प्रयोग हुआ है । अर्थात् नानात्व भेदत्व पृथक्त्व ये मृत्यु के स्वरूपधर्म है । इस तरह जो तत्त्व अपरिवर्तनीय है, नित्य है, कूटस्थ है, शाश्वत, अविचाली, ध्रुव, व्यापक व सनातन है उसे अमृत कहते हैं । यही अमृतात्मक एकत्वनिबन्धन तत्त्वविशेष ज्ञान है । तद्भिन्न विज्ञान है, यह दोनों में भेद जानना चाहिए । निष्कर्षत: यह कहना चाहिए कि– **एकं वा इदम् विबभूव सर्वम्** (ऋक्संहिता) । अर्थात् किसी एक को मूल मानकर अनेक की ओर आना विज्ञानशब्द का सहज पारिभाषिक अर्थ है तथा अनेकभावों को आधार बनाकर किसी एक की ओर जाना ही ज्ञान शब्द की सहज परिभाषा हैं । एक ब्रह्म से अनेकभावापन्न विश्व की सृष्टि कैसे हुई? इस प्रश्न का समाधान करने वाला पक्ष विज्ञानपक्ष हैं । वेदविज्ञान विषयक विज्ञान शब्द का यही पारिभाषिक अर्थ है ।

संस्थाया: परिचय:

श्री गिरनारी एज्युकेशन एन्ड चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित संतश्रीसंध्यागिरिबापू संस्कृत- वेद-विद्यालयस्य प्रारंभ: दिनांक :-१/७/२००३ तमेवर्षे उटजमध्ये पंच ऋषिकुमारैः-अभवत् । कालक्रमेण एषा संस्था उत्तरोत्तर विकासोन्मुखी भूत्वा वटवृक्ष समा जाता । अस्माकं संस्था ऋषिकुमाराणां कृते आवासनिवासभोजनादिकं नि:शुल्कं सेवां दत्वा वेद-वेदाङ्ग-पुराणशास्त्रादिकं पाठयति । अत्र अधुना शतऋषिकुमारा: निवसन्ति एवञ्च अस्माकं प्राण भूतानां षड्शतं धेनूनाम् अपि सम्यक् प्रकारेण पालनं पूज्यपादै: भगवतिगिरिबापू महोदयै: विस्वस्तमण्डलै: क्रियते ।

संतश्रीसंध्यागिरिबापू-संस्कृत-वेद-विद्यालय, सामखीयाली

संतश्रीसंध्यागिरिबापू-संस्कृत-वेद-विद्यालय, संकुलम्

पारदेश्वर महादेव

संतश्रीसंध्यागिरिबापू-गौशाला, सामखीयाली

संतश्रीसंध्यागिरिबापू-भोजनालयम्

संतश्रीसंध्यागिरिबापू-संस्कृत-वेद-विद्यालय-ऋषिकुमारै: सह गुरुजना:

संतश्रीसंध्यागिरिबापू-यज्ञशाला

।। प्रणीतिरस्तु सूनृता ।।